

नदियों के पर्यावरण की बेहतर समझ की ओर

भारत डोगरा

हाल के समय में पर्यावरणविदों द्वारा नदियों के प्राकृतिक और अबाधित प्रवाह के महत्त्व को समझने के प्रयास पर्यावरण की रक्षा व मछलियों सहित विभिन्न जलचरों की रक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। छोटी-बड़ी नदियों का प्राकृतिक और बिना किसी बड़ी कृत्रिम बाधा का प्रवाह इन नदियों में बसे विविध तरह के जीवन के लिए अति महत्त्वपूर्ण होता है।

जलीय जीवन पानी के एक विशेष स्तर, वेग व गुणवत्ता से अनुकूलित होता है। यदि बांध या बराज निर्माण से नदी का बहुत-सा पानी मोड़ दिया जाए या बांध प्रबंधन की आवश्यकताओं के कारण जल स्तर अचानक घटता-बढ़ता है तो इसका जलीय जीवन पर प्रतिकूल असर होना स्वाभाविक है। यदि मिट्टी/गाद जलाशय में बैठती जाएगी व मिट्टी रहित पानी नीचे आएगा तो इसका भी अनेक जलचरों पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। यह मिट्टी-गाद यदि आसपास के खेतों तक नहीं पहुंचेगी तो मिट्टी की उर्वरता व मिट्टी निर्माण की प्रक्रिया पर प्रतिकूल असर पड़ेगा।

अनेक जलीय जीव, विशेषकर मछलियां प्रजनन के समय दूर तक जाती हैं और यदि इस लंबी यात्रा में बांध-बराज की बाधा उत्पन्न हो जाए तो उनके प्रजनन चक्र में गंभीर समस्या उत्पन्न हो सकती है। हालांकि मछलियों के आवागमन के लिए ऐसी परियोजनाओं में विशेष तरह की सीढ़ियां बनाने की व्यवस्था है पर इनकी व्यवहारिक उपयोगिता संदेहास्पद है।

नदी में सामान्य समय में बहुत कम पानी रह जाने से आसपास के गांवों में कुओं का जल स्तर नीचे गिरने व जल संकट उत्पन्न होने की आशंका रहती है। दूसरी ओर, अचानक पानी छोड़े जाने से यकायक बाढ़ की स्थिति उत्पन्न होती है।

सामान्य समय में नदियों में पानी कम रह जाने व उनका

वेग कम हो जाने का असर कई बार समुद्र व नदी के मिलन स्थल के आसपास के क्षेत्र पर भी पड़ता है। नदियों के पानी का वेग व मात्रा कम हो जाने के कारण समुद्र का खारा पानी जमीनी क्षेत्र में अंदर तक घुस आता है। इससे उपजाऊ तटीय प्रदेशों की खेती बरबाद होती है तथा वहां पेयजल संकट पैदा हो जाता है। तटीय क्षेत्र समुद्र की जैव विविधता की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण होते हैं। यदि उनमें नदियों का मीठा पानी व उसके साथ बहकर आने वाली गाद के पोषक तत्व न पहुंचें तो तटीय क्षेत्रों की प्रजनन क्षेत्र वाली भूमिका पर प्रतिकूल असर होता है। इस तरह नदी के साथ-साथ समुद्र की जैव-विविधता पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है।

इस तरह के महत्त्वपूर्ण परंतु अब तक उपेक्षित मुद्दों की बेहतर समझ बनने के साथ अब यह मांग ज़ोर पकड़ रही है कि बांध बनने के बाद भी नदी की मूल धारा में एक निश्चित जल प्रवाह सुनिश्चित किया जाना चाहिए। मूल धारा में इतना जल प्रवाह सुनिश्चित करने के बाद ही पानी को मोड़ा जाना चाहिए ताकि नदी के जीवन की रक्षा हो व नदी अपनी पर्यावरणीय भूमिकाएं निभा सके।

इसे पर्यावरणीय बहाव कहते हैं। इस मांग को सिद्धांत रूप में तो प्रायः मान्यता दे दी जाती है पर व्यावहारिक स्तर पर पर्यावरणीय बहाव को कहीं ज़रूरत से कम न कर दिया जाए यह आशंका बनी हुई है।

नदी के प्राकृतिक बहाव के महत्त्व की बेहतर समझ बनाने के साथ यह मांग भी ज़ोर पकड़ रही है कि जो नदियां अभी अपने प्राकृतिक व अक्षुण्ण रूप में बची हैं उनकी इसी रूप में रक्षा की जाए। नदियों के पर्यावरण व नदी-जीवों की सही रक्षा इसी रूप में हो सकती है व नदी के पर्यावरण की सही समझ भी निर्बाध प्राकृतिक प्रवाह वाली नदियों के अध्ययन से ही मिल सकती है। (**स्रोत फीचर्स**)